E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2021; 3(2): 113-116s
Received: 25-01-2021
Accepted: 27-02-2021

रविभूषण तिवारी
शोधार्थी शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. पी एन मिश्र
आचार्य शिक्षा, शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
रविभूषण तिवारी
शोधार्थी शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

रीवा जिले के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक स्थिति का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

रविभूषण तिवारी एवं डॉ. पी एन मिश्र

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र रीवा जिले के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक स्थिति का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन पर आधारित है। विभिन्न मनोवैज्ञानिक कारक एक दूसरे को किसी न किसी प्रकार से प्रभावित करते है। यह अत्यावश्यक है कि विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास हेतु मनोवैज्ञानिक कारकों से शिक्षक परिचित हों। मानसिक स्वास्थ्य के रूप में शिक्षक अपनी क्षमताओं को महसूस करता है। शिक्षक क्षमताओं के द्वारा मानसिक व बौद्धिक तनाव को दूर कर सकता है। मानसिक स्वास्थ्य व्यवहार से सम्बन्धित होता है जिसके द्वारा जीवन के सामान्य तनाव से निपटा जा सकता है। विभिन्न विचारों व बाधाओं के मध्य संतुलित व्यवहार बनाया जा सकता है। शोध से प्राप्त निष्कर्षों के अनुसार मानसिक स्थिति और शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सह सम्बन्ध और उच्च एवं निम्न मानसिक स्थिति वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया है।

मुख्यशब्द: रीवा जिला, माध्यमिक विद्यालय, मानसिक स्थिति, शैक्षिक उपलब्धि।

1. प्रस्तावना
व्यक्ति के मानसिक विकास में संवेगों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान होता है। सुखद संवेगात्मक स्थिति होने पर मानसिक स्वास्थ्य में भी वृद्धि होती है। साथ ही उसकी सभी मानसिक शक्तियाँ एवं क्षमताएँ अधिक सक्रियता से कार्य करने में सहयोग करती हैं अर्थात् मानसिक स्वास्थ्य हेतु सकारात्मक संवेगात्मक बुद्धि का होना आवश्यक है। यह भी सत्य है कि बुद्धि एवं सृजनात्मकता में संबंध होता है। बच्चों की सृजनात्मकता की प्रवृत्ति ज्ञात होने पर उन्हें नवीन आविष्कार एवं अनुसंधान के लिए प्रेरित कर उनका आत्मबल एवं विश्वास बढ़ाया जा सकता है।
ईश्वर द्वारा निर्मित सभी जीवों में "मानव" श्रेष्ठ कृति है क्योंकि उसे ईश्वर प्रदत्त "अद्भुत मस्तिष्क" प्राप्त हुआ है जिसके द्वारा वह सोचने, समझने, मनन करने, तर्क करने, समस्या समाधान तथा सृजनात्मकता की पूर्ति आदि कार्यों को कर सकता है। उसे "भाषा" रूपी एक उपहार ईश्वर से प्राप्त हुआ जो निश्चित ही उसे सभी जीव–जन्तुओं में श्रेष्ठता प्रदान करता है। लेकिन मनुष्य को श्रेष्ठ मानव बनाने में उसे आदिमानव से मानव बनाने मे अगर किसी की श्रेष्ठ भूमिका निसंदेह है तो वह उसे माँ सरस्वती द्वारा प्रदत्त "शिक्षा का वरदान।"
शिक्षा मानव जीवन को जीव–जन्तुओं तथा पशु–पक्षियों के जीवन से पृथक रूप में प्रस्तुत करके मानव की सर्वोत्तम परिभाषा को स्पष्ट करती है। मानव यद्यपि धरती की सर्वोत्तम कृति है, परन्तु शिक्षा मानव को सुसंस्कृत बनाती है और इसके मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक विकास में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहायक होती है।
मानवीय चेतना के प्रारम्भ से ही माना जाता है। शिक्षा मनुष्य के सामान्य व्यवहार के साथ–साथ विशिष्ट व्यवहार को भी सर्वोत्तम ढंग से सम्पादित करती है। शिक्षा के अभाव में मनुष्य नाम मात्र का ही मनुष्य बन कर रह सकता है। मनुष्यता की वास्तविकता पहचान शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। मनुष्य ने असम्भव से असम्भव कार्य को शिक्षा द्वारा ही सम्भव बनाया है।
विपरीत परिस्थितियाँ वातावरण से अनुकूलन नहीं, आदि समस्याएं विद्यार्थी में मानसिक तनाव उत्पन्न करती है जिससे उनमें चिन्ता, कुण्ठा, निराशा उत्पन्न हो जाती है और उसका रुझान शिक्षा से हटकर असामाजिक क्रियाओं में लगने लगता है किन्तु यदि बालक संवेगात्मक रूप से परिपक्व तथा मानसिक रूप से स्वस्थ होगा तो वह इन समस्याओं पर विजय प्राप्त कर सकेगा एवं अपने को वातावरण से समायोजित कर पाएगा किन्तु यदि व्यक्ति असामान्य व्यवहारों को प्रदर्शित करता है तो उसके पीछे सामाजिक, आर्थिक, मानसिक एवं नैतिक कारक हो सकते हैं, विभिन्न मनः स्थितियाँ जैसे मानसिक तनाव और अस्वस्थता, व्यक्तित्व का असंतुलन, दूषित वातावरण का प्रभाव, चिन्ता, संवेगात्मक अपरिपक्वता, मानसिक अस्वस्थता आदि व्यक्ति के आचरण, व्यवहार, मानसिकता, शैक्षिक

उपलब्धि तथा सामन्जस्य की क्षमता की विसंगतियाँ उसके व्यवहार तथा शिक्षा में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित होती हैं।

अतः शोधार्थी द्वारा आवश्यक समझा गया कि शिक्षकों की मानसिक स्थिति का प्रभाव विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर क्या पड़ेगा ? इस शोध समस्या का अध्ययन करना, औचित्यपूर्ण एवं महत्वपूर्ण है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

शैक्षिक महत्व की दृष्टि से बुद्धि व मानसिक क्रियाकलाप मनुष्य का पूर्ण विकास करते है। शिक्षक शिक्षा, समाज, देश के लिए सुयोग्य नागरिक तैयार कर एक उत्पादन इकाई का निर्माण करते है। किशोरावस्था में बालक के मानसिक स्वास्थ्य का स्तर सही रखना अत्यन्त आवश्यक होता है क्योंकि यही वह दौर होता है जब बालक आगामी जीविकोपार्जन के लिये विभिन्न विषयों का चुनाव कर अपने भविष्य की आधारशिला रखते है। उनके ऊपर अभिभावकों की अनावश्यक उम्मीदों का बोझ उनकी मासूमियत, सजृनशीलता तथा स्वस्थ क्रियाकलापों जैसे रूचि के कार्य करना आदि को धीरे–धीरे औचित्यहीन साबित कर देता है जिसका नकारात्मक असर उनके शैक्षिक प्रदर्शन पर भी पड़ने लगता है। लगातार मेहनत करने पर भी मनमाफिक अंक न आना, उन्हें हतोत्साहित करता है। अभिभावकों की 90 प्रतिशत + के प्रति अंधी दौड़ उनके स्वाभाविक मानसिक विकास को बुरी तरह प्रभावित करती है। शोधार्थी द्वारा चयनित शोध कार्य इस क्षेत्र में पूर्णतः नवीन है जो शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी व महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

3. उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्दश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है :–

- शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति तथा शैक्षिक उपलब्धि में सह संबंध का अध्ययन करना।
- शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के उच्च एवं निम्न मानसिक स्थिति वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

शोध के क्षेत्र में व्यक्तिगत अनुभव भी परिकल्पनाओं के निर्माण में भी काफी महत्वपूर्ण स्रोत हैं। एक कुशलकर्ता अनुसंधानकर्ता अपने व्यक्तिगत शोध के आधार पर जिन सामाजिक समस्याओं को वह अपने दैनिक जीवन में महसूस करता है उनके प्रति अपने दृष्टिकोण के आधार पर विभिन्न घटनाओं के सम्बन्ध में परिकल्पनाओं का निर्माण कर सकता है। परम्परागत व्यवहार में जो बदलाव हम देखते हैं, उसके सम्बन्ध में जो कुछ हम सोचते हैं उनसे भी परिकल्पनाओं के निर्माण में सहयोग मिलता है।

शोध कार्य की परिकल्पना निम्नवत् है–

1. शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई सह संबंध नही पाया जाता है।
2. शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के उच्च एवं निम्न मानसिक स्थिति वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही पाया जाता है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र केवल रीवा जिले तक ही सीमित है जिसके अंतग्रत कुल 9 विकासखण्ड–रीवा, सिरमौर, जवा, हनुमना, मऊगंज, रायपुर कर्चुलियान, गंगेव, नईगढ़ी एवं त्योंथर हैं। शोधकर्ता द्वारा जिले के सभी विकासखण्डों से 10–10 माध्यमिक विद्यालयों का चयन कर उनमें से कुल 90 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन विधि द्वारा किया गया है। चयनित विद्यालयों 4–4 शिक्षक चयनित कर कुल 360 शिक्षक और प्रत्येक माध्यमिक विद्यालय से 10 छात्र और 10 छात्राएं चयनित कर कुल 1800 छात्र–छात्राओं का चयन दैव निदर्शन पद्धति के माध्यम से साक्षात्कार अनुसूची बनाकर सर्वेक्षण किया गया है।

6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधिः** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधिः** सर्वेक्षण विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिशत (%), S.D., 'r', 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण

शोधार्थी ने न्यादर्श में चयनित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक स्थिति का छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली व परीक्षाफल के आधार पर किया गया है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण तथा शोध कार्य करने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से कौशर, एफ (1982)[1], कुमारी, विनीता एवं कुमार, रमेश (2018)[2], पाण्डेय, के.पी., (1985)[3], गुप्ता एस.पी. (2001)[4], मेहता, सी. (1970)[5], निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. (1993)[6], राजगोपाल, एस. (1988)[7] एवं कुशवाहा, उमाशंकर एवं श्रीवास्तव, डॉ. अखिलेश कुमार (2021)[8] ने शोध विधि एवं माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक स्थिति का छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. रीवा जिले का सामान्य परिचय

मध्यप्रदेश के उत्तरीपूर्वी भाग में स्थित रीवा जिले का आकार त्रिभुजाकार है जो मध्यप्रदेश राज्य का एक सीमान्त क्षेत्र है। रीवा जिला मध्यप्रदेश के पूर्वोत्तर हिस्से में लगभग 24.18^0 अंश से 25.12^0 अंश उत्तरी अक्षांश और 81.02^0 अंश 82.20^0 अंश पूर्वी देशान्तर के मध्य तक फैला हुआ है।[9] इस जिले के उत्तरी भाग में उत्तरप्रदेश का इलाहाबाद, बांदा जिले और पूर्वोत्तर क्षेत्र में मिर्जापुर जिला स्थित है, दक्षिणी क्षेत्र में शहडोल और पश्चिमी क्षेत्र में रीवा संभाग का सतना जिला स्थित है, पूर्व दक्षिण में सीधी व सिंगरौली जिले की सीमाओं से लगा हुआ है, जिले की सर्वाधिक लम्बाई पूर्व से पश्चिम लगभग 125 किलोमीटर और उत्तर से दक्षिण की चौड़ाई लगभग 96 किलोमीटर है। यह भूभाग दक्षिण दिशा में कैमोर की पर्वत श्रृंखला से आच्छादित है और जिले के मध्य भाग में विन्ध्यांचल पर्वत की श्रेणियां स्थित

है।[10] जिले का सम्पूर्ण 6287.5 वर्ग किलोमीटर है जो मध्यप्रदेश राज्य के सम्पूर्ण क्षेत्रफल का 1.42 प्रतिशत है। जिले के 66625 हेक्टेयर भूभाग पर पहाड़ियां है और शेष भूभाग कृषि कार्य में प्रयोग की जाती है। जिले की समुद्र तल की ऊँचाई 980 फीट है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्रमांक 1: "शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई सह संबंध नही पाया जाता है।"

सारणी क्रमांक – 1: शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति तथा शैक्षिक उपलब्धि में सह–संबंध का अध्ययन

श्रेणी	संख्या	मध्यमान	df	'r'	सार्थकता
मानसिक स्थिति	900	107.20	1798	0.999	छै
शैक्षिक उपलब्धि	900	107.11			

NS= Not significant

$df = N_1 + N_2 - 2, 900 + 900 - 2 = 1798$

0.05 Lrj ij r dk eku = 0.677

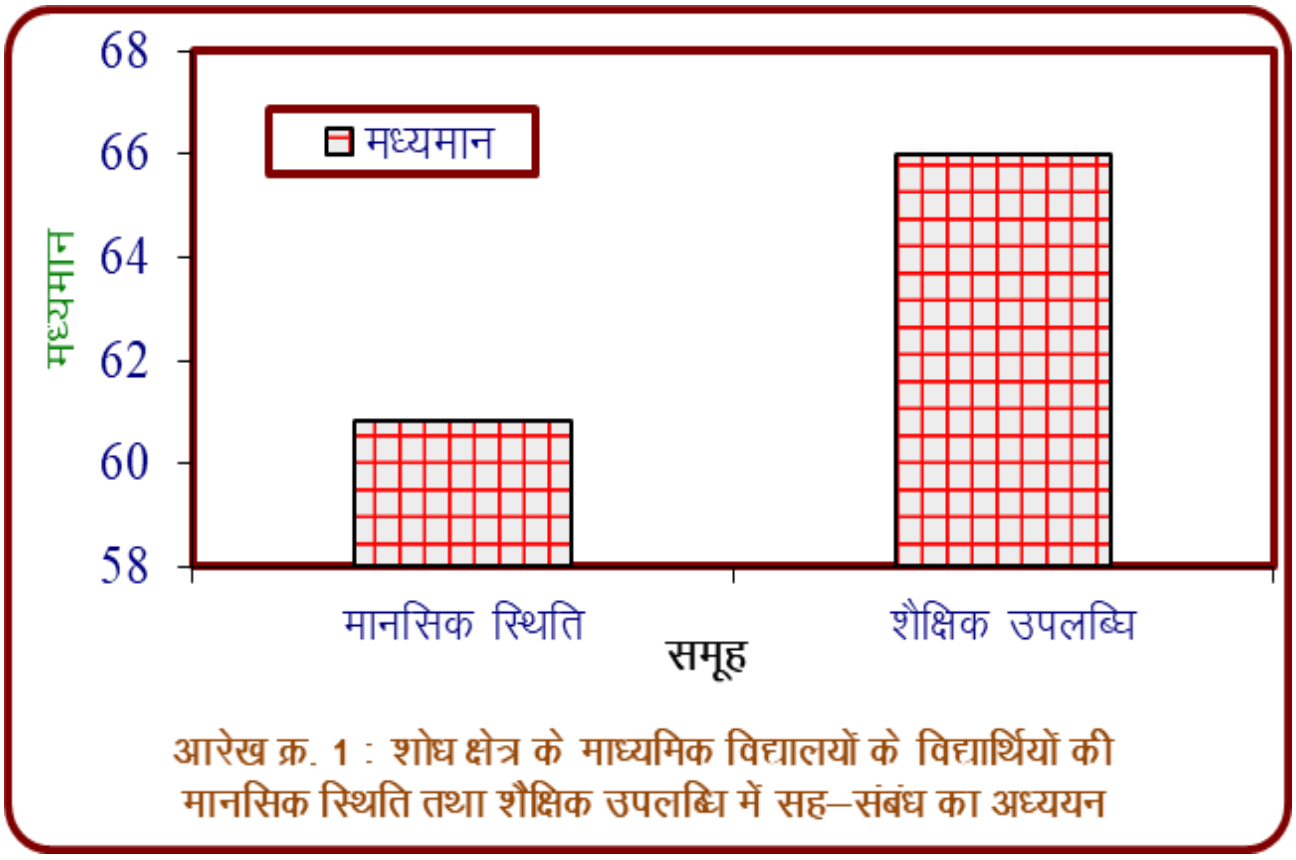

आरेख क्र. 1 : शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति तथा शैक्षिक उपलब्धि में सह–संबंध का अध्ययन

उपरोक्त तालिका एवं आरेख से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक स्थिति का विद्यार्थियों के मानसिक स्थिति तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में मानसिक स्थिति का मध्यमान 107.20 तथा शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 107.11 तथा मानसिक स्थिति व शैक्षिक उपलब्धि का सहसम्बन्ध 0.999 है। इससे यह विदित होता है कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक स्थिति का विद्यार्थियों के मानसिक स्थिति तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई सहसम्बन्ध नही पाया जाता है। यह परिकल्पना के संगत है। अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

परिकल्पना क्रमांक 2: "शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के उच्च एवं निम्न मानसिक स्थिति वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही पाया जाता है।"

सारणी क्रमांक 2: शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के उच्च एवं निम्न मानसिक स्थिति वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।

श्रेणी	संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				सार्थकता
		M	SD	df	't'	
उच्च मानसिक स्थिति	900	50.10	14.66	1798	3.12	0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर है।
निम्न मानसिंक स्थिति	900	47.98	14.18			

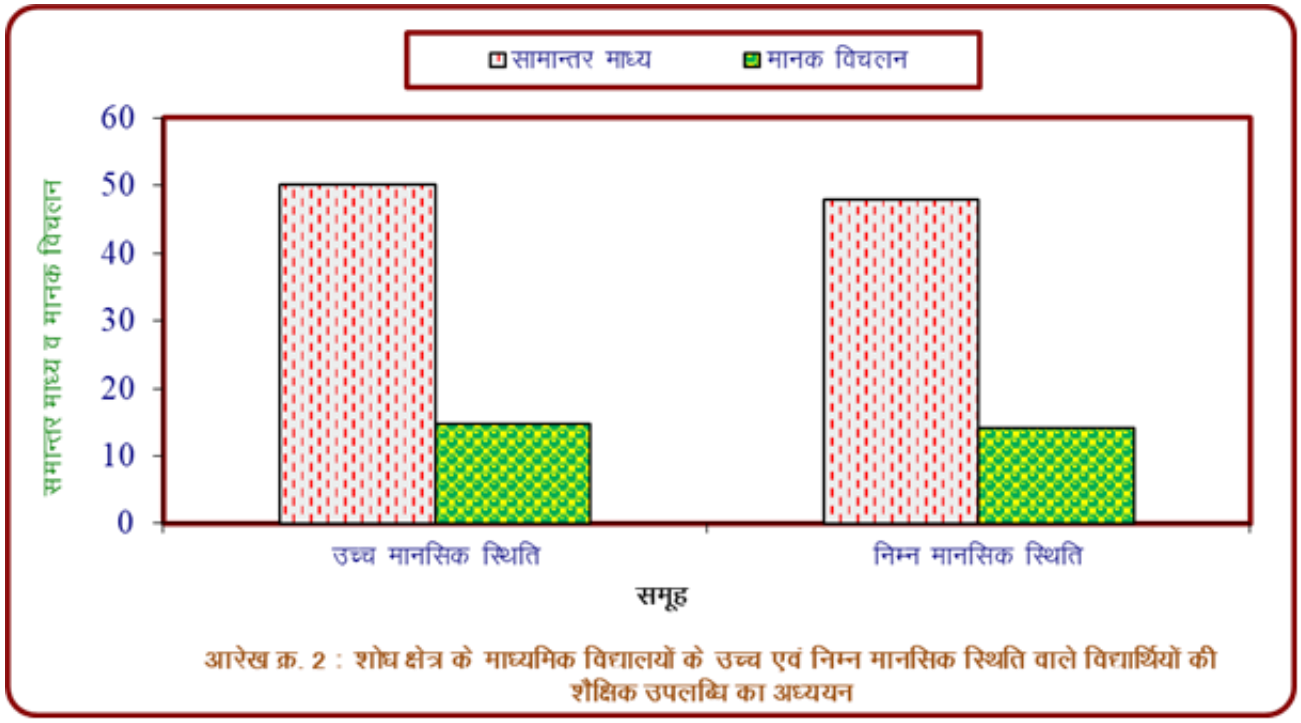

आरेख क्र. 2 : शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के उच्च एवं निम्न मानसिक स्थिति वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

उपरोक्त सारणी एवं आरेख के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि उच्च मानसिक एवं निम्न मानसिक स्थिति वाले विद्यार्थियों के मध्यमान क्रमशः 50.10 एवं 47.98 तथा मानक विचलन 14.66 एवं 14.18 है। 0.05 विश्वास स्तर से टी का प्राप्त मान अधिक है। अतः उच्च मानसिक एवं निम्न मानसिक स्थिति वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः परिकल्पना 02 अस्वीकृत हुई।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र में संकलित आँकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं–

- माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक स्थिति का विद्यार्थियों के मानसिक स्थिति तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई सहसम्बन्ध नही पाया जाता है।
- शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के उच्च एवं निम्न मानसिक स्थिति वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. कौशर एफ. – बुद्धि, सृजनात्मक एवं व्यक्तित्व का बच्चों की जिज्ञासा से संबंध का अध्ययन – IIIrd Survey, NCERT Publications, New Delhi , 1982;2:402.
2. कुमारी, विनीता एवं कुमार, रमेश – विद्यालयों में अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन, Multidisciplinary Academic Research, 2018;15(1):927-933.
3. पाण्डेय के.पी. – मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1985.
4. गुप्ता एस.पी. – आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद संस्करण, 2001.
5. मेहता सी. – नेशनल पॉलिसीर ऑफ एलिमेन्ट्री टीचर एजूकेशन इन इण्डिया, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 1970.
6. निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. – भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें, (प्रथम संस्करण) कनिष्ठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993.
7. राजगोपाल एस – सृजनात्मकता के अन्तर्गत उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों पर कक्षागत वातावरण, उपलब्धि परीक्षण और मानसिक योग्यता का अध्ययन, 1988.
8. कुशवाहा, उमाशंकर एवं श्रीवास्तव, डॉ. अखिलेश कुमार – सतना जिले में किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं में मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Applied Research. 2021;7(1):400-403.
9. मध्यप्रदेश सामान्य ज्ञान एक दृष्टि में, उपकार प्रकाशन, आगरा, 2002.
10. रीवा दर्शन – गायत्री पब्लिकेशन, पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीव्यूटर्स मध्यप्रदेश, संस्करण, 2013.